
दिनांक 12-10-1975 की अव्यक्त वाणी
पर आधारित मुरली कविता

कम्पलेन्ट समाप्त कर कम्पलीट
बनने की प्रेरणा

व

प्रसिद्धि-संकल्प और बोल की
सिद्धि पर आधारित है

देह की स्मृति भूलकर आत्मिक रूप अपनाओ
साक्षी हो अपना और सबका पार्ट देखते जाओ

साक्षी स्वरूप की स्मृति जितनी ठोस बनाओगे
उतना बाप के साथ का अनुभव करते जाओगे

केवल बापदादा को अपने मन का मीत बनाओ
और किसी से लेनदेन का संकल्प नहीं चलाओ

सर्व सम्बन्धों का सुख सिर्फ एक बाप से पाओ
बाप का प्यार पाने में बुद्धि से मगन होते जाओ

व्यर्थ संकल्प चलाने की ये आदत पूरी मिटाओ
अपने हर संकल्प को बाप समान बनाते जाओ

शुद्रपने और विष के संस्कार कभी ना जगाओ
समर्थी स्वरूप से कभी भी मूर्छित ना हो जाओ

बाप से हर सम्बन्ध के सुख का अनुभव करना
किसी एक सम्बन्ध की कमी महसूस ना करना

अपने हर संकल्प और बोल सिद्ध करते जाओ
सिद्ध हुए संकल्पों का पोता मेल देखते जाओ

सर्व संकल्प और बोल को समर्थ बनाते जाओ
खुद को सिद्ध स्वरूप बनाकर प्रसिद्धि पाओ

सिद्धि स्वरूप अवस्था वाणी से परे ले जाएगी
केवल अवस्था तुम्हें अव्यक्त फरिश्ता बनाएगी

मौन की इसी अवस्था से सेवा को आगे बढ़ाना
रूहानी नयन और मुस्कान से सेवा करते जाना
